❍ 11 / 07 / 22 की मुरली से चार्ट ❍
⇛ TOTAL MARKS:- 100 ⇚

∫∫ 1 ∫∫ होमवर्क (Marks: 5*4=20)

➢➢ *कलयुगी पतित संबंधो से बुधीयोग हटाया ?*

➢➢ *फ्राकदिल बनकर रहे ?*

➢➢ *यथार्थ चार्ट द्वारा हर सब्जेक्ट में सम्पूरण पास हुए ?*

➢➢ *छोटी छोटी बातों में दिल तो नहीं भरा ?*

────────────────────────

✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° °
☆ *अव्यक्त पालना का रिटर्न* ☆
❂ *तपस्वी जीवन* ❂
✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° °

〰✧ *साइन्स वाले भी सोचते हैं ऐसी इन्वेंशन निकाले जो दु:ख समाप्त हो जाए, साधन सुख के साथ दु:ख भी देता है। सोचते जरूर है कि दु:ख न हो, सिर्फ सुख की प्राप्ति हो लेकिन स्वयं की आत्मा में अविनाशी सुख का अनुभव नहीं है तो दूसरों को कैसे दे सकते हैं।* आप सबके पास तो सुख का, शान्ति का, नि:स्वार्थ सच्चे प्यार का स्टॉक जमा है, तो उसका दान दो।

✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° °

∫∫ 2 ∫∫ तपस्वी जीवन (Marks:- 10)

>> *इन शिक्षाओं को अमल में लाकर बापदादा की अव्यक्त पालना का रिटर्न दिया ?*

⁺˚ ˚ ••✩••✧˚ ˚ ••✩••✧˚ ˚ ••✩••✧˚ ˚

⁺˚ ˚ ••✩••✧˚ ˚ ••✩••✧˚ ˚ ••✩••✧˚ ˚
☆ *अव्यक्त बापदादा द्वारा दिए गए* ☆
❂ *श्रेष्ठ स्वमान* ❂
⁺˚ ˚ ••✩••✧˚ ˚ ••✩••✧˚ ˚ ••✩••✧˚ ˚

✺ *"मैं दिलाराम बाप की दिल में रहने वाली आत्मा हूँ"*

〰✧ सदैव अपने को दिलाराम बाप की दिल में रहने वाले अनुभव करते हो? दिलाराम की दिल तख्त है ना। तो दिलतख्तनशीन आत्माएं हैं-ऐसे अपने को समझते हो? सदा तख्त पर रहते हो या कभी उतरते, कभी चढ़ते हो? अगर किसको तख्त मिल जाये तो तख्त कोई छोड़ेगा? *यह तो श्रेष्ठ भाग्य है जो भगवान् के दिलतख्त-नशीन बनने का भाग्य मिला है। इससे बड़ा भाग्य कोई हो सकता है? ऐसे प्राप्त हुए श्रेष्ठ भाग्य को भूल तो नहीं जाते हो? तो सदैव तख्त-नशीन आत्माएं हैं-इस स्मृति में रहो।*

〰✧ जो दिल में समाया हुआ रहेगा, परमात्म-दिल में समाए हुए को और कोई हिला सकता है? *दिलतख्त-नशीन आत्माएं सदा सेफ हैं। माया के तूफान से भी और प्रकृति के तूफान से भी-दोनों तूफान से सेफ न माया की हलचल हिला सकती है और न प्रकृति की हलचल हिला सकती है।* ऐसे अचल हो? या कभी-कभी अचल, कभी-कभी हिलते हो? यादगार अचलघर है। चंचल-घर तो बना ही नहीं। अनेक बार अचल बने हो। अभी भी अचल हो ना। हलचल में नुकसान होता है और अचल में फायदा है। कोई चीज हिलती रहे तो टूट जायेगी ना।

〰✧ सदा यह याद रखो कि हम दिलाराम के दिलतख्त-नशीन हैं। यह स्मृति ही तिलक है। तिलक है तो तख्त-नशीन भी हैं। इसीलिए जब तख्त पर बैठते हैं तो पहले राज्य-तिलक देते हैं। तो यह स्मृति का तिलक ही राज्य-तिलक है। तो

तिलक भी लगा हुआ है। या मिट जाता है कभी? तिलक कभी आधा रह जाता है और कभी मिट भी जाता है-ऐसे तो नहीं। यह अविनाशी तिलक है, स्थूल तिलक नहीं है। जो तख्त-नशीन होता है, उसको कितनी खुशी होती है, कितना नशा होता है! आजकल के नेताओंको तख्त नहीं मिलता, कुर्सी मिलती है। तो भी कितना नशा रहता है-हमारी पार्टी का राज्य है! वो तो कुर्सी है, आपका तो तख्त है। *तो स्मृति नशा दिलाती है। अगर स्मृति नहीं है तो नशा भी नहीं है। तिलक है तो तख्त है। तो चेक करो कि स्मृति का तिलक सदा लगा हुआ है अर्थात् सदा स्मृतिस्वरूप हैं?*

✧◦°••☆••✧◦°••☆••✧◦°••☆••✧◦°

∬ 3 ∬ स्वमान का अभ्यास (Marks:- 10)

➢➢ *इस स्वमान का विशेष रूप से अभ्यास किया ?*

✧◦°••☆••✧◦°••☆••✧◦°••☆••✧◦°

✧◦°••☆••✧◦°••☆••✧◦°••☆••✧◦°

❂ *रूहानी ड्रिल प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा की प्रेरणाएं* ☆

✧◦°••☆••✧◦°••☆••✧◦°••☆••✧◦°

〰✧ आस्ट्रेलिया वालोंने सेवा तो बढाई है ना। अभी कितने स्थान हैं वहाँ (5) हरेक को राज्य करने के लिए अपनी-अपनी प्रजा तो जरूर बनानी ही है। (विनाश में हम लोगों का क्या होगा?) विनाश में आस्ट्रेलिया सारा एक टापू बन जायेगा। कुछ पानी
में आ जायेगा कुछ ऊपर रह जायेगा। *आप लोग सेफ रहेंगे।*

〰✧ विनाश के पहले ही आप लोगों को आवाज पहुँचेगा। *जब तुम सभी सेफ स्थान पर पहुँच जायेंगे फिर विनाश होगा।* जैसे गायन है भटठी में बिल्ली के

पूंगरे सेफ रहें। तो *जो बच्चे बाप की याद में रहने वाले हैं, वह विनाश में विनाश नहीं होंगे लेकिन स्वेच्छा से शरीर छोडेगे,* न कि विनाश के सरकमस्टान्सेज के बीच में छोडेगे।

~~✧ *इसके लिए एक बुद्धि की लाइन क्लियर हो और दूसरा अशरीरी बनने का अभ्यास बहुत हो।* कोई भी बात हो तो आप अशरीरी हो जाओ। अपने आप शरीर छोडने का जब संकल्प होगा तो संकल्प किया और चले जायेंगे। इसके लिए बहुत समय से प्रैक्टिस चाहिए।

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

∫∫ 4 ∫∫ रूहानी ड्रिल (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर रूहानी ड्रिल का अभ्यास किया ?*

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

❂ *अशरीरी स्थिति प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा के इशारे* ☆

✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°••☆••✧°°

~~✧ *जैसे साइंस के साधनों द्वारा दूर की वस्तु समीप अनुभव करते हैं। ऐसे दिव्य बुद्धि द्वारा कितनी ही दूर रहने वाली आत्माओं को समीप अनुभव करेंगे।* जैसे स्थूल में साथ रहने वाली आत्मा को स्पष्ट देखते, बोलते, सहयोग देते और लेते हो, ऐसे चाहे अमेरिका में बैठी हुई आत्मा हो लेकिन दिव्य-दृष्टि, दिव्य दृष्टि ट्रान्स नहीं लेकिन रूहानियत भरी दिव्य दृष्टि - जिस दृष्टि द्वारा नैचुरल रूप में आत्मा और आत्माओं का बाप भी दिखाई देगा। *आत्मा को देखूं। यह मेहनत नहीं होगी, पुरुषार्थ नहीं होगा लेकिन हूँ ही आत्मा, हैं ही सब आत्मायें। शरीर का भान ऐसे खोया हुआ होगा जैसे द्वापर से आत्मा का भान खो गया था।* सिवाए आत्मा के कुछ दिखाई नहीं देगा। आत्मा चल रही है,

आत्मा कर रहीं है। *सदा मस्तक मणी के तरफ तन की आँखे वा मन की आँखे जायेंगी। बाप और आत्माएँ- यही स्मृति निरन्तर नैचुरल होगी।*

⟡˚˚ ••☆••⟡˚˚ ••☆••⟡˚˚ ••☆••⟡˚˚

∬ 5 ∬ अशरीरी स्थिति (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर अशरीरी अवस्था का अनुभव किया ?*

⟡˚˚ ••☆••⟡˚˚ ••☆••⟡˚˚ ••☆••⟡˚˚

∬ 6 ∬ बाबा से रूहरिहान (Marks:-10)
(आज की मुरली के सार पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- सवेरे उठ बाप की याद से बेड़ा पार लगाना"*

➳ _ ➳ मीठे बाबा के प्यार की गहराइयो में डूबी हुई मै आत्मा एक गीत गुनगुना रही थी... कि मेरी बुद्धि के तार को मीठे बाबा ने वतन में खींच लिया... अपनी सूक्ष्म काया में वतन पहुंची तो मीठे बाबा भी *आ चल के तुझे मै लेके चलूँ एक ऐसे गगन के तले.*.. गीत गुनगुनाते हुए बाहें पसारे... मुझे गले लगाने को मेरे करीब आ गए... अपने आराध्य को यूँ अपने प्रेम में मन्त्रमुग्ध देख मेरी ख़ुशी का पारावार न रहा...

❉ *मीठे प्यारे बाबा मुझ आत्मा के सुखो के चिंतन में मगन होकर कहने लगे :- * "मीठे फूल बच्चे... जनमो की प्यास के बाद जो ईश्वर पिता का साथ पाया है... उस साथ भरे पलों को 21 जनमो के स्थायी सुखो में बदल दो... सवेरे सवेरे उठकर इन मीठी यादो से अपना दामन इस कदर भर दो... कि यह आनन्द भरे पल, सतयुगी सुखो की बहार बन जाएँ..."

➳ _ ➳ *मै आत्मा अपने भगवान को पिता रूप में देख देख अति आनन्दित हो रही हूँ और कह रही हूँ :-* "ओ मीठे दुलारे मेरे बाबा... कब सोचा था मीठे बाबा कि भाग्य यूँ अनन्त ऊंचाइयों पर मुझे बिठाएगा... *ईश्वर पिता ही मेरा सच्चा साथी बनकर सदा का साथ निभायेगा..*. अपनी श्रीमत की डोरी से मुझे सुखो कि ऊँची डगर तक खींच ले जायेगा..."

❉ *प्राणप्रिय बाबा मुझ आत्मा को अतुलनीय धन सम्पदा का मालिक बनाते हुए कहने लगे :-* "मीठे लाडले बच्चे... सुबह के शांत लम्हों में, *खुबसूरत यादो के मौसम में, मन के सच्चे मीत मीठे बाबा से मिलन मनाओ.*.. और यूँ यादो में खोये खोये कब दुःख के सागर से निकल चलोगे पता ही न चलेगा... यह यादे ही सुख नगरी में शानोशौकत से स्वागत करेंगी..."

➳ _ ➳ *मै आत्मा अपने भाग्य पर इठलाती हुई झूम उठी... और मीठे बाबा से कहा :-* "मेरे प्यारे बाबा... जब से आपको जाना है, पहचाना है, आप रोम रोम में समाये हो... मै आत्मा सच्चे मीत को पाकर धन्य धन्य हो गयी हूँ... झूठ के नातो से बाहर निकल कर... *आपके आगोश में डूबीे, सच्चे प्रेम की शीतल छाया में पुनः खिल उठी हूँ..*.

❉ *मुझ आत्मा के दिली जज्बात सुनकर प्यारे बाबा मुस्कान से भर गए... और वरदानी दृष्टि से मुझे भरपूर करते हुए बोले :-* "सिकीलधे प्यारे बच्चे... खुबसूरत भाग्य ने जो यूँ सहज ही सच्चे सतगुरु से मिलवाया है... उस भाग्य पर बलिहार हो जाओ... और इस कदर ईश्वरीय यादो में दीवाने हो जाओ... कि स्वर्ग के असीम सुख कदमो में स्वागत को बिखरे हो... *सवेरे के खुबसूरत पलों में यादो के आलम में खो जाओ.*.."

➳ _ ➳ *मै आत्मा ईश्वर पिता की अपने उज्ज्वल भविष्य के चिंतन में डूबे देख कहती हूँ :-* "प्यारे बाबा मेरे... आप जीवन में न थे तो कितना तन्हा, कितना सूना और वीरान सा जीवन था... आप आये हो तो खुशनुमा बहार आई है... जीवन रौनक से भर गया है... दिल सदा *बाबा ओ मेरे मीठे बाबा* का ही

गीत गाता है... *यादो में डूबा हुआ मन हर पल आपको ही पुकारता है.*.." अपने दिल के भाव सारे भाव मीठे बाबा को सुनाकर मै आत्मा अपने ठिकाने पर लौट आई..."

∬ 7 ∬ योग अभ्यास (Marks:-10)
(आज की मुरली की मुख्य धारणा पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- एक बाप से सच्चा - सच्चा लव रखना है*"

➳ _ ➳ अपने गिरधर गोपाल शिव बाबा के प्रेम की लगन में मगन मैं आत्मा रूपी गोपी, मन को सुकून देने वाली अपने कान्हा की मीठी मीठी यादों में खोई हुई, स्वयं को इस संसार के शोरगुल से दूर एक छोटे से सुंदर से टापू पर देख रही हूं। *चारों और पहाड़ियों से घिरा यह छोटा सा स्थान प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर है*। तन और मन दोनों तरफ से बिल्कुल शांत चित्त स्थिति में स्थित होकर मैं प्रकृति की इस अद्भुत छटा का आनंद ले रही हूं। *प्रकृति के इस अद्भुत सौंदर्य का आनन्द लेते लेते मैं अपनी आंखें बंद कर अपने गिरधर गोपाल अपने मीठे शिव बाबा को याद करती हूँ* तभी कानों में बांसुरी की मधुर आवाज सुनाई देने लगती है और मैं मंत्रमुग्ध होकर उस आवाज को सुनने लगती हूं।

➳ _ ➳ बांसुरी की मधुर आवाज के साथ साथ एक बहुत ही सुंदर नजारा मुझे दिखाई देता है। मैं देख रही हूँ मेरे शिव बाबा, मेरे नटखट गिरधर गोपाल सामने खड़े बांसुरी बजा रहे हैं और बांसुरी की मधुर आवाज को सुनकर गोपियां दौड़ी दौड़ी चली आ रही है। *नटखट कान्हा गोपियों के संग रास रचा रहे हैं*। एक अद्भुत दृश्य मैं देख रही हूँ कि बांसुरी की मधुर आवाज से बेसुध होकर कोई गोपी मुस्करा रही है, कोई जोर - जोर से हंस रही है और कोई अपने कान्हा के प्रेम में डूबी आंसु बहा रही है। एकाएक गिरधर गोपाल का स्वरूप

बापदादा के लाइट माइट स्वरूप में परिवर्तित हो जाता है।

➾ _ ➾ अब मैं देख रही हूं कान्हा के प्रेम में डूबी उन सभी गोपियों को लाइट के फ़रिशता स्वरुप में बाप-दादा के सामने बैठे हुए। *बापदादा मधुर महावाक्य उच्चारण कर रहे हैं और सभी फरिश्ते मंत्रमुग्ध होकर बाबा की वाणी को सुन रहे हैं*। कुछ बाबा के प्रेम में मगन होकर आंसू बहा रहे हैं और कोई पूरी तरह से बाबा के प्रेम में डूबे हुए हैं।

➾ _ ➾ मन को लुभाने वाले इस दृश्य को देख कर मैं सोचती हूं कि भक्ति में जो गायन है कि कान्हा जब मुरली बजाता था तो गोपियां अपनी सुध-बुध खो कर दौड़ी चली आती थी। वास्तव में यह गायन तो इस समय का है जो मैं मन बुद्धि रूपी दिव्य नेत्रो से इस समय देख रही हूं कि *शिव बाबा जब ब्रह्मा तन में आकर मुरली चलाते हैं तो ब्राह्मण आत्माएं रुपी गोपिकाएं कैसे अपने कान्हा अपने शिव बाबा के प्रेम में मग्न हो कर अपनी सुध बुध खो देती है*।

➾ _ ➾ इस खूबसूरत नजारे को देख अपने गिरधर गोपाल से मिलने की तड़प और तीव्र हो जाती है और मैं आत्मा गोपी इस नश्वर देह को छोड़ अपने गिरधर गोपाल से मिलने चल पड़ती हूँ उनके धाम। आवाज की दुनिया से पार, पांचो तत्वों से भी पार, मैं पहुँच जाती हूँ गोल्डन प्रकाश से परिपूर्ण, संपूर्ण शांति से भरपूर अपने निजधाम में । *यहां मैं पूर्ण शांत और आनन्दमय स्थिति का अनुभव कर रही हूँ । मेरे सामने हैं सर्व सुखों के दाता, आनन्द के सागर मेरे गिरधर गोपाल मेरे प्यारे परम पिता परमात्मा*। उनको देखते ही मेरा रोम रोम जैसे खिल उठा है। मेरी ख़ुशी का कोई पारावार नही है। मन में एक ही गीत बज रहा है "पाना था सो पा लिया"।

➾ _ ➾ अपने शिव प्रीतम के प्रति अपने असीम प्रेम के उदगार को अपने मन में उठ रहे संकल्पो के माध्यम से मैं उनके सामने प्रकट कर रही हूँ। हे मेरे प्राणेश्वर, मेरे नाथ जन्म -जन्म से मैं आपको याद कर रही थी। आखिर मैं आपके पास पहँच ही गई। *आपसे मिल कर मेरे जन्म-जन्म के कष्ट मिट

गये*। सर्व दुखों से परे आपके पावन प्रेम की शीतल छाया को पाकर मैं धन्य-धन्य हो गई हूँ। आपको पाकर मैंने सब कुछ पा लिया मेरे स्वामी।

➽ _ ➽ मेरे प्यार का प्रतिफल मेरे प्राणेश्वर शिव बाबा के प्यार की शक्तिशाली किरणों के रूप में अब मुझ पर बरस रहा है जो मुझे आनन्द विभोर कर रहा है। अपने गिरधर गोपाल से असीम प्रेम पा कर अब मैं धीरे - धीरे परमधाम से नीचे आ रही हूँ और प्रवेश कर रही हूँ अपनी साकारी देह में। *मेरा मन अब परम आनन्द से भरपूर है। मेरा जीवन ईश्वरीय प्रेम से भर गया है। अब मुझे बाप समान फ्राकदिल बन सर्व आत्माओं को इस परमात्म सुख, परमात्म प्रेम का अनुभव करवाना है* और सबको परमात्म वर्से का अधिकारी बनाना है । यही मेरा अब इस साकार सृष्टि पर कर्तव्य रह गया है ।

————————————————

∫∫ 8 ∫∫ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के वरदान पर आधारित...)

✺ *मैं यथार्थ चार्ट द्वारा हर सब्जेक्ट में सम्पूर्ण पास मार्क्स लेने वाली आत्मा हूँ।*
✺ *मैं आज्ञाकारी आत्मा हूँ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

————————————————

∫∫ 9 ∫∫ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के स्लोगन पर आधारित...)

✺ *मैं आत्मा छोटी-छोटी बातों पर दिल भरने से सदा मुक्त हूँ ।*

✺ *मैं आत्मा शक के शिकारी बनने से सदा मुक्त हूँ ।*
✺ *मैं शिव शक्ति हूँ ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

——————————————————————

∫∫ 10 ∫∫ अव्यक्त मिलन (Marks:-10)
(अव्यक्त मुरलियों पर आधारित...)

✺ अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ और कई अच्छी-अच्छी बातें सुनाते हैं - *मेरी इच्छा नहीं थी लेकिन किसी को खुश करने के लिए किया! क्या अज्ञानी आत्मायें कभी सदा खुश रह सकती हैं? ऐसे अभी खुश, अभी नाराज़ रहने वाली आत्माओं के कारण अपना श्रेष्ठ कर्म और धर्म छोड़ देते हो जो धर्म के नहीं वह ब्राह्मण दुनिया के नहीं*। *अल्पज्ञ आत्माओं को खुश कर लिया लेकिन सर्वज्ञ बाप की आज्ञा का उल्लंघन किया ना*! तो पाया क्या और गंवाया क्या! जो लोक अब खत्म हुआ ही पड़ा है। चारों ओर आग की लकड़ियाँ बहुत जोर शोर से इकट्ठी हो गई हैं। लकड़ियाँ अर्थात् तैयारियाँ। जितना सोचते हैं इन लकड़ियों को अलग-अलग कर आग की तैयारी को समाप्त कर दें उतना ही लकड़ियों का ढेर ऊँचा होता जाता है। जैसे होलिका को जलाते हैं तो बड़ों के साथ छोटे-छोटे बच्चे भी लकड़ियाँ इकट्ठी कर ले आते हैं। नहीं तो घर से ही लकड़ी ले आते। शौक होता है। तो आजकल भी देखो छोटे-छोटे शहर भी बड़े शौक से सहयोगी बन रहे हैं। तो ऐसे लोक की लाज के लिए अपने अविनाशी ब्राह्मण सो देवता लोक की लाज भूल जाते हो! कमाल करते हो! यह निभाना है या गंवाना है! इसलिए *ब्राह्मण लोक की भी लाज स्मृति में रखो। अकेले नहीं हो, बड़े कुल के हो तो श्रेष्ठ कुल की भी लाज रखो*।

✺ *"ड्रिल :- अज्ञानी आत्माओं को खुश करने के लिए बाप की आज्ञा का उल्लंघन नही करना*"

➳ _ ➳ शान्त, मगर निश्चय में अडोल... नदी का किनारा *उमंगों से भरपूर इठलाती... किनारों की मर्यादा में बहती नदी की धारा*... अपने प्रियतम सागर से मिलने को आतुर
गुनगुनाती हुई बहती जा रही है... *सफर लम्बा है, दुश्वारियों से भरा है, मगर प्रेम इन दुश्वारियों से कब डरा है*... नदी की धारा में मोती चुगती दूधिया हंसो की टोली... और *मैं आत्मा हंसिनी, उन्हीं किनारों पर सूर्य की किरणों के रथ पर सवार उतरते अपने शिव प्रियतम को निहारती हुई*... सुनहरें प्रकाश से चमक उठी है नदी की धाराएँ... मन खुशी से मानो गा उठा है... *यूँ खातिर मेरे तुम जो तशरीफ़ लाये, है मुझसे मोहब्बत, ये दिल मेरा गाये*...

➳ _ ➳ सोना बरसाती हुई मेरे शिव प्रियतम की किरणें, गहन शान्ति की अनुभूति करा रही है... मेरा मन पूरी तरह शान्ति की चरम अनुभूतियों में डूबा हुआ... *मैं आत्मा ड्रामा के इस चक्र में अपनी जन्म जन्मान्तर की यात्रा का दर्शन करती हुई*... परम धाम में बिन्दु रूप में... शान्ति सागर में गहराई में गोते लगाती हुई... सभी आत्माओं को शान्ति के प्रकंम्पन प्रदान कर रही हूँ...

➳ _ ➳ मैं आत्मा देवताई शरीर धारण कर सतयुगी सृष्टि में पार्ट बजा रही हूँ... सम्पूर्ण सुखों का उपभोग करते हुए अब मेरी गिरती कला की शुरूआत हो चुकी है... और मैं आत्मा, स्वयं को रावण की कैद में देख रही हूँ... *मैं बन्दी कैसे बनी, मुझे आहिस्ता- आहिस्ता सब कुछ याद आ रहा है*...

➳ _ ➳ मुझे याद आ रहा है... *अज्ञानी रावण को खुश करने के लिए श्रीमत का उल्लंघन करना, मर्यादा की लकीर को लांघकर कुटिया से बाहर कदम रखना... और फिर मेरा मेरे ही वजूद से लम्बा वनवास*... अशोक वाटिका से शोक वाटिका का मेरा आश्रय बन जाना...

➳ _ ➳ एक लम्बें इन्तज़ार और भटकन के बाद आज फिर से मेरे शिव प्रियतम ने मुझे ढूँढ लिया है... और मुझे याद दिलाई है मेरे शान्त स्वरूप, सुख स्वरूप की... कानो में धीरे से आकर गुनगुना दिया है... *अकेले नही हो तुम, बडे कुल के हो तो श्रेष्ठ कुल की भी लाज रखना*... मैं आत्मा प्रतिज्ञा कर रही

हूँ... *अज्ञानी आत्माओं को खुश करने के लिए मैं अब कभी बाप की आज्ञा का उल्लंघन नही करूँगी...* कभी खुश कभी नाराज़ रहने वाली आत्माओं के लिए मैं अपनी ब्राह्मण कुल का श्रेष्ठ धर्म और कर्म नही छोडूगीँ, अल्पज्ञ के लिए मैं सर्वज्ञ की आज्ञा का उल्लघंन नही करूँगी..

➳ _ ➳ *आकाश से फूलों की बारिश करते बाप दादा... मेरे मस्तक पर विजय तिलक लगाते हुए, मेरे सर पर हाथ रखकर मुझे सफलता मूर्त का वरदान दे रहे है*... नदी से निकलकर हंसों की टोली ने मुझे चारों ओर से घेर लिया है... मानों मुझ में और मेरी प्रतिज्ञा में अपना निश्चय प्रकट कर अपनी खुशी जाहिर कर रहे हों... *ये लहरे ये किनारें, ये हंसों की टोली मेरे बाबा की मीठी बोली मेरे श्रेष्ठ कुल का गुणगान कर रही है*...

⊙_⊙ आप सभी बाबा के प्यारे प्यारे बच्चों से अनुरोध है की रात्रि में सोने से पहले बाबा को आज की मुरली से मिले चार्ट के हर पॉइंट के मार्क्स ज़रूर दें ।

♔ ॐ शांति ♔